# विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

# शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

**विषय संस्कृत दिनांक 23-02-2021**

**वर्ग षष्ठ शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय**

**एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित**

**क्रिया'**

**"क्रिया' के इन दसों रूपों को लकारों के सहारे (संस्कृत में) व्यक्त किया जाता है, जिसे 'लकारार्थ-प्रक्रिया' कहते हैं, अर्थात् संस्कृत में क्रिया-पदों की काल-रचना। उपर्युक्त विवेचन को ध्यान में रखते हुए उसी क्रम से ये दसों लकार नीचे दिए जाते हैं-**

लुङ्–सामान्य भूतकाल–अद्य सुष्ठु वृष्टिः अभूत्। (आज अच्छी वर्षा हुई।)

लङ्-अनद्यतन भूतकाल–ह्यः वृष्टिः अभवत्। (कल वर्षा हुई थी।)

लिट्-परोक्ष अनद्यतन भूतकाल-राम-रावणयोः युद्धं बभूव। (राम-रावण में युद्ध हुआ था।)

लुट्–सामान्य भविष्यत्काल–अद्य वर्षाः भविष्यन्ति। (आज वर्षा होगी।)

लुट-अनद्यतन भविष्यत्काल–श्वः वृष्टिः भविता। (कल वर्षा होगी।)

लुङ्-हेतुहेतुमद् भविष्यत्काल-यदि सुवृष्टिः अभविष्यत् तर्हि सुभिक्षम् अभविष्यत्। (यदि अच्छी वर्षा होगी तो फसल भी अच्छी होगी।)

लट्-वर्तमानकाल-अद्य वृष्टिः भवति। (आज वर्षा होती है।)

लोट-आदेश आदि के लिए–

(क) भवान् मम सहचरः भवतु। - (आप मेरे साथी होइए।)

(ख) तव कल्याणं भवतु। - (तुम्हारा कल्याण हो।)

लिङ्–

(क) अनुज्ञा या विधिपरक-भवान् मम सहचरो भवेत्। - (आप मेरे सहायक हों।)

(ख) आशीर्वाद या कल्याण-कामनापरक-तव कल्याणं भूयात्। - (आपका कल्याण हो।)

लेट्–इस लकार का प्रयोग केवल वैदिक संस्कृत में ही मिलता है, लौकिक संस्कृत में नहीं; अतः उदाहरण छोड़ा जा रहा है।